डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर मधुबनी

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

अंधायुग में आधुनिक बोध

अंधायुग में पौराणिक कथा को आधार अवश्य बनाया है पर इसके माध्यम से उन्होंने आधुनिक बोध को प्रकट किया है। डॉ. धर्मवीर भारती गंभीर चिंतक थे। उन्होंने कहा है –

“साहित्य वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का एक सांस्कृतिक अंग होता है। वह उस व्यवस्था से प्रभावित होता है और उस व्यवस्था को प्रभावित करता है।”

दो महायुध्दों के पश्चात समाज में एक विघटन की स्थिति आ गई, जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य विचित्र शून्यता में परिवर्तित होने लगा। मूल्यों का विघटन बहुत तेजी से होने लगा। भौतिक सुख – सुविधाओं में बढ़ोतरी हुई परंतु मानवीयता निर्वासित होने लगी।

‘अंधायुग’ में कवि ने पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक भावबोध को रूपायित किया है। दो विश्वयुद्धों के परिणामस्वरूप जो मानवीय विघटन की स्थिति बनी। मनुष्य अनास्थामय, अहंवादी, व्यक्तिवादी, निराश और भावना – विगलित हो गया। युध्द की विभीषिका का प्रत्यक्ष प्रभाव नागासाकी और हिरोशिमा के खंडहरों में देखा जा सकता है तो उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव जापान की अनगिनत लावारिस संतानों और विकलांगता में देखा जा सकता है। अन्धायुग में युद्ध के दुष्परिणामों का अत्यंत विस्तृत और प्रभावशाली चित्रण हुआ है। विघटित मानव – मूल्य वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या बन गई है। अंधायुग में इस मानव – मूल्य को प्रभु कृष्ण के रूप में चित्रित कर समाधान प्रस्तुत किया गया है।

आज के इस परमाणु युग में प्रत्येक क्षण युध्द की आशंका बढ़ती जा रही है, और यह मनुष्य को लगातार भयभीत कर रही है। एक अणुबम समस्त सृष्टि को ध्वंस के कगार पर ला सकता है। -

“ज्ञात क्या तुम्हें परिणाम इस ब्रम्हास्त्र का।

यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नरपशु !

तो आगे आनेवाली सदियों तक

पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी”

विश्व की दो बड़ी शक्तियों को कवि चुनौती देते हैं। दोनों महाशक्ति देशों को कवि स्वयं व्यास की भूमिका में आकर कहते हैं –

“ये दोनों ब्रम्हास्त्र अभी नभ में टकराएंगे

सूरज बुझ जाएगा

धरा बंजर हो जाएगी।"

युद्ध से संहार और तदुपरांत विभीषिका के अतिरिक्त और होता ही क्या है? भारत की तटस्थता की तुलना कवि ने संजय की तटस्थता से की है। साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में अश्वत्थामा इसी समस्या को उठाता है क्योंकि साम्राज्यवादी देश तटस्थ राष्ट्र को अपना शत्रु ही मानता है –

"तटस्थ?

मातुल मैं योद्धा नहीं हूँ

बर्बर पशु हूँ

यह तटस्थ शब्द

है मेरे लिए अर्थहीन।

सुन लो यह घोषणा

इस अंधे बर्बर पशु की

पक्ष में नहीं है जो मेरे

वह शत्रु है।"

युद्ध विराम के पश्चात भी नरसंहार होता रहता है। एक ओर शांति – वार्ताएँ होती हैं और दूसरी ओर युद्ध पुनः छुटपुट रूप में चलता रहता है। सर्वत्र अंधापन विजयी होता है और विवेक हर जगह हारता है –

"यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है

क्या अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय

दोनों ही पक्षों को खोना ही खोना है"

कवि ने निरस्त्रीकरण पर बल दिया है।

कवि कहते हैं कि इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करना होगा –

"मानव – भविष्य को बचायेगा?

क्या कोई सुनेगा"

महाभारत की कथा के माध्यम से धर्मवीर भारती ने आधुनिक बोध का जीवंत चित्रण किया है।